Toppersnotes®
Unleash the topper in you

राजस्थान

राज्य पात्रता परीक्षा (SET)

पेपर - 2

(संस्कृत)

भाग - 3

SIERRA INNOVATIONS

Index

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	इकाई - IX **सामान्य परिचय**	
1.	रामायण का परिचय	1
2.	महाभारत का परिचय	6
3.	पुराण का परिचय	10
	इकाई - X **विशिष्ट अध्ययन**	
4.	कौटिलीय	20
5.	मनुस्मृति का सामान्य परिचय	34
6.	याजवल्क्य स्मृति	35
7.	लिपि	69
8.	अभिलेख परिचय	73

IX - X UNIT

पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र एवं अभिलेखशास्त्र

इकाई – IX (क) निम्नलिखित का सामान्य परिचय

प्रस्तुत रामायण को जगप्रसिद्ध महर्षि वाल्मीकि जी ने संस्कृत भाषा में लिखा था, जिसका हिंदी भाषा में सुबोध, सुस्पष्ट व सरल ढंग से प्रस्तुत करना ही हमारा उदेश्य है। यह ग्रन्थ उनके द्वारा रचित ही है। ग्रन्थों के प्रकाशन के अधिकार पर ही संम्पादन व डिजाइन-प्रेम, सभ्यता और संस्कृति आदि नीतिपूर्ण बातों को अपने में समाहित किया है। मानव जाति के कल्याण के लिए सिर्फ ग्रन्थ पर उपदेशात्मक अमृत का प्रभाव आज भी हमारे समाज में व्याप्त हुआ है, संरक्षित है।

रामायण का परिचय

राम और लक्ष्मण व रंवों अपने पिता महाराज दशरथ का "राजताब", भम्न माकर दोनों ही विशाल शकिशाली थे - राम का रंग श्यामल व लक्ष्मण का गोरावर्ण। दोनों अत्यंत पराक्रमी, प्रतापी तथा थेर्य और क्षमाशीलता से परिपूर्ण थे। दोनों महान धनुर्थर थे तथा शस्त्र विद्या में निपुण थे। योग्य मंत्री, विद्वान ऋषि-मुनि तथा प्रजा उनके चरित्र से अत्यंत संतुष्ट था। उन आदर्शें के कारण ही इन्टें 'मर्यादा-पुरुष्वोत्म " कहा जाता था। इनके चरित्र-कर्म, प्रेम व त्याग की भावनायें, कर्तत्य के प्रति समर्पण आदि गुणों ने सभी के हुद्यों पर अमिट छाप छोड़ी थी। माता-पिता तथा गुरुजनों का सदैव आदर व सम्मान करते थे। प्रजा के सुख और आपदाओं में वे साथ खड़े रहते थे। प्रजा वालों की समस्त भलाई का ध्यान रखते थे। उनकी प्रजा उन्हें पुत्र-प्रेम से चाहती थी। अयोध्या में सभी सुखी थे।

महाराज दशरथ के तीन रानियों थी परंतु उनके कोई संतान नहीं थी। उन्होंने संतान के लिए पुत्र यझ किया जिसमें से प्राप्त हुए खीर को तीनों रानियों ने ग्रहण किया, जिससे कौशल्या से राम, कैकेयी से भरत तथा सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म हुआ। चारों राजकुमार बचपन से ही तेजस्वी, बुद्धिमान, पराक्रमी थे। बाल्यकाल से ही वेद-वेदांग, शास्त्र तथा शस्त्र विद्याओं में निपुण थे। विश्वामित्र जी की प्रेरणा से राजा दशरथ ने राम और लक्ष्मण को उनके साथ भेजा था। राम और लक्ष्मण ने वहाँ ताड़का, मारीच आदि राक्षसों का वध किया और ऋषियों में उनके प्रति आदर भाव बढ़ गया।

आगे वे मिथिला गए। जहाँ शिव धनुष भंग करके सीता जी से उनका विवाह हुआ और वे फिर अयोध्या लौट आए। वहाँ रामायण का कालानुसार कालखंड निम्न प्रकार है।

बालकाण्ड

इस काण्ड में 77 सर्ग हैं, इसमेकषि चार सर्गों में रामायण रचना की पूर्व-पीठिका है, इसके अर्थात् उत्तर अंग राम का चरित्र-विस्तार प्रस्तुतीकृत है। इसमें है राम के चरित्र की सुस्पष्ट बाललीलाएँ का मन, तपोवनों की उड़ान है, ताड़का वध आदि भी उन्हे रामायण महाकाव्य को रचना करने के लिए प्रेरोपित करते हैं।

इसे रमाणीय पुराण उपनिषतात्मक रामायण है।

इसके बाद वाल्मीकि ने मर्यादामय होकर राम और सीता के सभी गुणधर्मों का संस्कार सार किया और उनके बाल राम, सीता आदि पात्रों का वर्णन किया है । इस काण्ड में राजा दशरथ के जीवन व शासन, पुथ्वीर्य, यज्ञ, चार यज्ञ, महात्वुण आदि पात्रों की आख्या भी लिखा, विभिन्न प्रकार के यज्ञ, यज्ञ तथा हिंन्दु विश्वासिको के साथ भानव (प्रजा) जनसमृहों में प्रमुख तोड़म राम-सीता, लक्ष्मण, उर्मिला आदि चारों भाइयों के विवाह का वर्णन है ।

अयोध्याकाण्ड

इस काण्ड में 119 सर्ग है, साहित्यिक दृष्टि से भी यह काण्ड अत्यन्त महत्वपूर्ण है । इसमें राम राजनीतिक ही दिखते, मध्यया-केकयी प्रसंग, राम वन गमन, दशरथ मृत्यु, चित्रकृट पर राम-भरत मिलन, अयोध्या वापसी लाने की कई यज्ञ उल्लेख राम की परमा-पाडुकाएँ लेकर भरत का अयोध्या लौटना आदि कई महत्वपूर्ण प्रसंग इस काण्ड में वर्णित हैं।

अरण्यकाण्ड

इस काण्ड में 75 सर्ग हैं। राम के वन में रहने के कारण ही इसका नाम 'अरण्यकाण्ड' रखा गया है। इसमें पंचवटी का वर्णन, शूर्पणखा का प्रसंग, मारीच वध, खरदूषण वध, कबंध, विराध आदि चौदह हजार राक्षसों का वध, सीता का अपहरण, राम का विलाप, सीता को अशोक वाटिका में रखना, राम का शबरी आश्रम में जाना आदि वर्णित विषय हैं।

किष्किन्धाकाण्ड

इसमें 67 सर्ग हैं। इस काण्ड में राम ने पम्पा सरोवर के अन्त में दर्शन किए हैं। इसमें हनुमान द्वारा सुग्रीव से राम की मित्रता करना, बाली का राम के द्वारा वध, बाली की पन्नि तारा का विलाप, सीता की खोज, सम्पाति का सीता के बारे में बताना और सुग्रीव को किष्किन्धा का राजा घोषित करना ये मुख्य अंश हैं।

सुन्दरकाण्ड

यह काण्ड 68 सर्गों वाला है। यह वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण का सबसे अच्छा, सुन्दर व मर्मस्पर्शी काण्ड है। इसमें हनुमान द्वारा अनेक बाधाओं को दूर कर अशोक वाटिका में प्रवेश करना, अन्तःपुर की स्त्रियों को देखकर विचडित होना, विभीषण के मन में राम के प्रति भक्ति-भाव को देखकर प्रफुल्लित होना, आदि का वर्णन है। इस काण्ड में हनुमान द्वारा सीता की खोज अशोक वाटिका में करना, अशोक वाटिका को उजाड़ना, लंका दहन और राम का सन्देश हनुमान द्वारा सीता को सुनाना आदि महत्वपूर्ण विषय वर्णित हैं।

अग्रकांड

(लङ्ञा काण्ड) यह काण्ड 128 सर्गों वाला है। वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण का यह सबसे बड़ा सर्ग है। इस सर्ग को अनेक विद्वानों ने अपने-अपने मतानुसार व्यक्त किया है। कुछ विद्वान तो इसे युद्ध काण्ड के नाम से तथा कुछ विद्वान लङ्का काण्ड कै नाम से जानते हैं। इसमें राम व रावण की सेना में घनघार युद्ध, मेघनाद, कुम्भकरण, रावण वध, सीता की अग्नि परीक्षा, पुष्यक विमान द्वारा अयोध्या वापसी राम का राजाभिषेक आदि विषयों का समावेश किया गया है।

इस सर्ग को अनेक विद्वानों ने अपने-अपने मतानुसार व्यक्त किया है। कुछ विद्वान तो इसे युद्ध काण्ड के नाम से तथा कुछ विद्वान लङ्बा काण्ड के नाम से जानते है । इसमें राम व रावण की सेना में घनघोर युद्ध, मेघनाद, कुम्भकरण, रावण वध, सीता की अम्नि परीक्षा, पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या वापसी राम का राज्याभिषेक आदि विषयों का समावेश किया गया है।

उत्तरकाण्ड

यह काण्ड 111 सर्गों वाला है। कुछ विद्वान इस काण्ड को प्रधुम्रत (लुप्त) मानते है, इस काण्ड में बालकाण्ड के समान ही अनेक इतिहास सम्बन्धी प्रमाणों की भरमार है । इस सर्ग में राम सम्बन्धी प्रमाण कम ही मिलते हैं इसमें लव-कुश जन्म, सीता का पाताल लोक में जाना, हनुमान के जन्म की कथा का वर्णन, रावण के जन्म का वृत्तान्त, सीता पूर्व जन्म में वेदवती होना, बाली द्वारा रावण को कांवड़ में रखने का प्रसंग, शमुघ्न द्वारा लवणासुर एवं शम्बूक का वध आदि महत्वपूर्ण विषयों का वर्णन है। करण रस प्रधान यह महाकाव्य अनुपम है।

वर्तमान में रामायण के चार संस्करण उपलब्ध हैं जिनका वर्णन निम्न है

- बम्बई संस्करण (ओलोच्य संस्करण/देवनागरी संस्करण) इस पर तिलक, शिरोमणि और भाषण टीकाएँ हैं।
- बंगाल संस्करण (गोड़ीय संस्करण) इस पर लोकनाथ टीका है।
- कश्मीर संस्करण परिममोत्तरीय संस्करण
- दक्षिणात्य संस्करण दक्षिण प्रदेशों से सम्बन्धित टीकाओं का संग्रह ही दक्षिणात्य संस्करण कहलाता है।
- इन चारों संस्करणों में बन्बई संस्करण सबसे लोकप्रिय माना जाता है।

रामायण का काल

विद्धान रामायण का रचनाकाल निम्नांकित प्रकार से स्वीकार करते हैं

- माध नरेश अजातरश्रु ने (500 ई. पू.) पाटलीपुत्र की स्थापना की। इस राजा ने शत्रु के आक्रमण से रक्षा के लिए गंगा-शोण नदी के संगम स्थल पर एक दुर्ग का निर्माण किया। रामायण में गंगा-शोण के संगम पर श्रीराम गमन का वर्णन है, किन्तु दुर्ग का उल्लेख नहीं है। इस प्रसंग से रामायण की रचना 500 ई. पू. से पहले ही सिद्ध होती है।
- रामायण में कौशल नरेश की राजधानी 'अयोध्या का वर्णन है, परन्तु बौद्ध-जैन ग्रन्थों में यह नगर 'साकेत' नाम से प्रसिद्ध हुआ है। राम के पुत्र लव ने अपनी राजधानी श्रावस्ती स्थापित की। बुद्ध के समय कौशल नरेश श्रावस्ती में ही राज्य करता था। अतः रामायण की रचना बुद्ध से पहले की ही हो सकती है।
- रामायण में विशाल और मिथिला इन दो राज्यों का वर्णन है। बुद्ध के समय में यह दोनों नगर वैशाली राज्य के अन्तर्गत ही आते थे। इस प्रमाण से रामायण की रचना बुद्ध के प्राचीन ही सिद्ध होती है।
- इस प्रकार रामायण की रचना ब्राह्मण काल के पश्चात् और बौद्ध काल से पहले अर्थात् 500 ई. पू. मानी गई है। अतः रामायण का रचनाकाल 500 ई. मे पहले ही स्तीकाग कगना तीक होगा।

रामायणकालीन समाज

रामायणकालीन समाज में परिवार का स्वरूप पितृसतात्मक था, जैसे "पितरि शुश्रूषा तस्य वा वचन क्रिया ।।"
अयोध्या में पिता की आज्ञा से ही राम वन गए। प्रतिव्रता स्त्रीयों में सीता, अनुसूया, कौशल्या, सुलोचना आदि नाम प्रसिद्ध हुए; जैसे "स्त्रीणाम आर्यस्वाभावानां परमं देवतं पति: ।।"
शिक्षा का स्वरूप मौखिक था। बालक प्राय: गुरूकुल में आचार्य की झोंपड़ी (आश्रम) में रहकर अध्ययन करते थे।
राजकुलों के बालकों के लिए अन्य प्रकार की विद्या और कला के साथ सैन्य विद्या का अध्ययन भी अनिवार्य था। वेद विद्या का अध्ययन तो सभी के लिए अतिआवश्यक था। उस समय चार वर्ण (आश्रम) थे- ब्राह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, और संन्यास। और सोशल संस्कार थे- गर्भाधान, पुसंवन, सीमन्तोनयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन चूड़ाकर्म, कर्णवेद, उपनयन, वेदारंभ, समावर्तन विबाह, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्येष्टि संस्कार। रामायण में आठ प्रकार के विवाह का भी उल्लेख है- ब्राह्म, देव, आर्ष, प्रजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच विवाह।
वाल्मीकि, भरद्धाज, विश्वामित्र आदि ऋषियों के आश्रमों में निरन्तर यज्ञ, अग्निहोत्र, वेदाध्ययन, युद्ध विद्या आदि का अध्ययन होता था। इस प्रकार रामायण में उल्लेखित अनेक उदाहरणों से स्पष्ट होता था कि भारतीय समाज की स्थिति उन्नत थी। समाज में सभी प्रकार की सुख-सुविधाएँ उचित अवसर पर प्राप्त होती थी। आज भी यह माना जाता है कि रामायण कालीन समाज सभी प्रकार से उन्नत, समृद्ध आदर्शपूर्ण सुदृढ़ और सुसंगठित था।

परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत

महाकाव्य रामायण को परवर्ती काव्य और नाटकों का उपजीव्य स्वीकार किया गया है। इस महाकाव्य को आधार बनाकर कुछ महत्वपूर्ण काव्य और नाटक लिखे गाग हैं।

काव्यप्रत्य

- तुषृचेश् महाकाव्यम् (कालिदास)
- सेतुबन्ध (प्रवरसेन)
- ज्ञानचंद्रोदयम् (कुमारदास)
- रामायण पंचरती (भवभूति)
- भट्रिकाव्यम् (भटिट)

नाटक

- अभिषेक नाटकम् प्रतिमानाटकम् (भास:)
- महावीरचरितम् — उत्तररामचरितम् (भवभूति:)
- अनर्घराघवम्- (मुरारि)
- बालरामायणम् (राजशेखर:)
- कुसुममाला (विद्यानाग:)
- प्रसेन्नराघवम् (जयदेव)
- हनुमन्नाटकम् (दामोदर मिश्र)

चम्पूकाव्य

- रामायण चम्पू (भोज:)
- उत्तरचम्पू (वेंकटेय्वरी)
- रामकथा (अनन्तभट्ट)
- चम्पूरामायणम् (लक्षणभट्ट)

अन्य रामायण ग्रन्थ

- अध्यात्मरामायणम्, अदधुतरामायणम्
- अगस्त्य रामायणम् , आनन्द रामायणम्
- मयन्द रामायणम् भुषुण्डि, रामायणम्

रामायण का साहित्यिक महत्व

रामायण को एक उपजीव्य काव्य माना गया है। इसकी कथा, भाषा शैली को आधार बनाकर अनेक प्रसिद्ध महाकाव्यों का प्रणयन किया गया है। संस्कृत के अलावा हिन्दी, राजस्थानी, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं का साहित्य रामायण को आधार बनाकर लिखा गया है। जब पाठक रामायण को पढ़ता है तब ऐसा लगता है मानो रामायण की सुन्दर ललित प्रवाहपूर्ण, परिष्कृत भाषा पाठक को रसापावव की अतल गहराइयों में ले जाती है तथा प्रसंगानुकूल भावों का संयोजन, रसानुकूल भाषाशैली का प्रयोग, माधुर्य गुण से ओत-प्रोत पाठक के ध्यान को कहीं और जाने नहीं देती। आदिकाव्य वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण संस्कृत

रामायण में रस, छन्द, अलंकार

रस

क्रौंचवध की करुणता पूर्ण घटना से उद्धत रामायण ग्रन्थ में करुण रस की प्रधानता है।

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।

यत् क्रौच मिथुनादेकमवधि काममोहितम् ॥"

रामायण में यथा स्थान पर सभी रसों का प्रयोग किया गया है, जिसकी अभिव्यक्ति दिखाई देती है। विशेषतः, श्रृङ्गर रस की भी अधिकता है।

"रामायणे हि कृतो रसः' ॥

छन्द

आदिकवि वाल्मीकि के मुख से अनुष्टुप छन्द ही निकला जिसकी प्रधानता रामायण में दिखाई देती है। सर्ग के अन्त में उपजाति, भुजङ्गप्रयातम् पुफिताग्रा आदि छन्द भी प्राप्त होते है।

अलंकार

रामायण में अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा अर्थान्तरन्यास अलंकारों का प्रयोग भ हुआ है।

जैसे- बहुनि वर्षीन नदनि भानि ध्यायति नृय्यनिन समाश्रयसिन नयो घना

मतांगजा वनान्ता: प्रियाविहीना: शिथिल: प्लवङ्गन।

भावा-भाव- काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से भाषा सहज सरल तथा प्रवाहमान है।

रामायण में पड्च सन्धि का प्रयोग

रामायण में मुख्यतः पाँच सन्धियों का प्रयोग किया गया है, मुख सन्धि, प्रतिमुख सन्धि, गर्भ सन्धि, विमर्श सन्धि, और निर्वाहण सन्धि है। इस प्रकार रघुवंश जानकीहरण, उत्तरराम चरितम् आदि ग्रन्थों के उपजीव्य रामायण के साहित्यिक महत्व और काव्य की विशेषता को स्वयं ही सिद्ध करते हैं।

रामायण में आख्यान

आदिकाव्य रामायण में रामकथा के अतिरिक्त मूलकशः से सम्बन्धित कुछ प्रसंगवश आख्यान उपलब्ध हैं

- राजा सगर के पुत्रों की उत्पत्ति तथा अश्वमेध यज्ञ का आयोजन
- समुद्र मंथन और चतुर्दश रत्नों की प्राप्ति
- मेनका द्वारा विश्वामित्र का तपोभंग
- त्रिशंकु के यज्ञ की तैयारी।
- सुकेशादि की उत्पत्ति एवं राक्षस विस्तार।
- राजा नृग को श्राप।
- ययाति को अपने पुत्र से नव यौवन प्राप्ति।
- शम्बूक वध।
- वुध एवं इला से पुरूरवा की उत्पत्ति।
- रामायण से पूर्व शिव ने पार्वती को रामायण सुनाई थी, जिसे महारामायण के नाम से जाना जाता है।

- सुन: प्रोपाख्यान यहाँ महर्षि विश्वामित्र के उपदेश से सुन शेन: ने करण देव को पूजकर अपने प्राणों की रक्षा की।
- ऋष्यश्रृड्भन आख्यान ऋष्यश्रूज्न अड्भन देश के राजा रोमपाद के जमाता थे। इनको अध्यक्षता में ही राजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ हुआ।
- गड्ग्ग अवतरण आख्यान राजा सगर के अश्वमेध यज्ञ के आरम्भ से उसके प्रपोत्र भगीरथ की महान तपस्या से पृथ्वी पर गङ्भा का अवतरण हुआ इस कथा का वर्णन है।
- रामायण में इनके अतिरिक्त कार्तिकेय उत्पत्ति आख्यान मैत्र-करण आख्यान, अध्यावक आख्यान आदि उल्लेखनीय हैं।

महाभारत का परिचय

परम ऋषि व्यास द्वारा रचित महाभारत प्राचीन इतिहास का अक्षय स्रोत एवं विश्व कोष है। महाभारत शब्द की व्युत्पत्ति आचार्य पाणिनि ने व्याकरणिक पद्धति से की है। पाणिनि के अनुसार, भारत शब्द में महान् शब्द लगाने पर महाभारत शब्द बनता है। विद्वानों ने इसका निम्व प्रकार से अर्थ लिया है

"भारत योद्धाओं यांस्मिन युद्धे तद् भारतम् ।"

जिस युद्ध को भारतवंशी योद्धा लड़े हो वह भारत कहलाया, क्योंकि यह भारतो का महान युद्ध था। इसलिए यह महाभारत कहलाया। स्वयं महाभारत में यह लिखा है

"चतुर्वः: सरहस्थेक्यो वेदेध्यो क्षधिंक यदा
तदा प्रभृति लोकस्मिन महाभारतमुच्यते
महत्वे च गुरुत्वे च त्रियमाणो यतोऽधिकम
महत्वाच्च भाववत्वाच्च महाभारतमुच्यते
निवक्तमस्य यो वेद सर्वपापै: प्रमुच्यते ॥"

चारों वेदों उपनिषदों में भार और महत्व की दृष्टि से महाभारत अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए यह काव्य महाभारत कहलाया। जो इसकी निश्ति को जानता है वह संसार के समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। महाभारत प्राचीन भारत का सबसे बड़ा महाकाव्य है। यह एक धार्मिक ग्रन्थ भी है, इसमें उस समय का इतिहास लगभग एक लाख ग्यारह हजार श्लोकों में लिखा हुआ है। एक लाख से अधिक श्लोक होने के कारण महाकाव्य को 'शतसाहस्त्रीसंहिता' भी कहते हैं। विशाल काव्य होने के कारण इसे पाँचवों वेद भी इसे स्वीकार करते हैं।

महाभारत हिन्दुओं का प्रमुख काव्य ग्रन्थ है, जो स्मृति के इतिहास वर्ग में आता है। कभी-कभी इसे केवल भारत कहा जाता है, यह काव्य-ग्रन्थ भारत का अनुपम, धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक ग्रन्थ है। विश्व का सबसे लम्बा यह साहित्यिक ग्रन्थ और महाकाव्य हिन्दू धर्म के मुख्यतम ग्रन्थों में से एक है। इस ग्रन्थ को हिन्दू धर्म में पंचम वेद माना जाता है। यद्यपि इसे साहित्य की सबसे अनुपम कृतियों में एक माना जाता है, किन्तु आज भी यह ग्रन्थ प्रत्येक भारतीय के लिए अनुकरणीय सोत है। ये कृति प्राचीन भारत के इतिहास की गाथा है। इसी में हिन्दू धर्म का पवित्र ग्रन्थ शतातलीता उसिमलित है।

पूरे भारत में लगभग एक लाख ग्यारह हजार श्लोक, जो यूनानी काव्यों इलियड और ओडीसी से परिमाण में 10 गुना अधिक हैं, किन्तु हिन्दू मान्यताओं पौराणिक सन्दर्भों एवं स्वयं महाभारत के अनुसार इस काव्य का रचनाकार वेद-व्यास जी को माना जाता है। इस काव्य के रचयिता वेदव्यास जी ने अपने इस काव्य में वेदों, वेदांगों और उपनिषदों के गूढ़तम रहस्यों का निरूपण किया है। इसके अतिरिक्त इस काव्य में न्याय, शिक्षा चिकित्सा, ज्योतिष, युद्ध नीति, योगशास्त्र, अर्थशास्त्र, वास्तुशास्त्र, शिल्प शास्त्र, कामशास्त्र, खगोल विद्या तथा धर्म शास्त्र का भी विस्तार से वर्णन किया है। प्राचीन समय में इस काव्य ग्रन्थ को ऋषि मुनियों द्वारा मौखिक याद रखा जाता था, लेकिन बाद में इतने बड़े काव्य को याद रखना कठिन था। फिर इसके बाद इसकों पाण्डुलिपियों में लिखा गया। समय निकलने के बाद यह आधुनिक महाभारत के रूप में जनसामान्य के बीच आया।

इन सम्पूर्ण तथ्यों से यह माना जा सकता है कि महाभारत निश्चित तौर पर ज्योतिषीय तिथियों, भाषायी विश्लेषण, विदेशी सूत्रों एवं पुरातत्व प्रमाणों से मेल खाती है, परन्तु आधुनिक संस्कररण की रचना 600 से 200 ई. पूर्व हुई होगी। अधिकांश अन्य वैदिक साहित्यों के समान ही यह महाकाव्य भी पहले वाचिक परम्परा के द्वारा हम तक पीढ़ी दर पीढ़ी पहुँचा, और बाद में छपाई की कला के विकसित होने से पहले इसके और भी संस्कररण हो गए।

महाभारत की लोकप्रियता भारत, नेपाल, इण्डोनेशिया, श्रीलंका, जावा द्वीप, थाइलेण्डड, तिब्बत, म्यांमार आदि देशों में है। विद्वानों द्वारा महाभारत का मूल्यत्व और आधार कोरवों और पण्डवों के मध्य का आपसी संघर्ष है।

महाभारत का काल

महर्षि व्यास द्वारा विरचित महाभारत को पंचम वेद के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह महाकाव्य जय-भारत-महाभारत इन तीन स्वरुपों में विकरित हुआ है। अक्सर पर्वों में बना हुआ यह महाकाव्य कुरु राजवंश का इतिहास, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और दाशनिक दुगुटियों से युक्त आज भी अनुमधान को उचित मार्गदर्शन देने के लिए प्रस्तुत है। धर्मशास्त्र-अर्थशास्त्र-राजनीति शास्त्र आदि विद्याओं से युक्त यह ग्रन्थ विश्व कोश कहा जाता है। इसका रचनाकाल 400 ई. पू. निर्धारित किया गया है। महाभारत का कथानक भी वाल्मीकि द्वारा विरचित रामायण के समान परवर्ती कवियों और लेखकों के लिए पर्याप्त प्रेरणादायक है। वेदव्यास जी को महाभारत की रचना करने में 3 वर्ष लगे। इसका कारण यह हो सकता है कि उस समय लेखन लिमि इतनी विकरित नहीं थी। सर्वप्रथम वेदव्यास द्वारा रचित एक लाख श्लोकों और 100 पर्वों का 'जय' महाकाव्य जो बाद में महाभारत के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इनका सम्भावित रचनाकाल 1000 ई. ईसा पूर्व माना गया है।

दूसरी वार व्यास जी के कहने पर उनके शिष्य वैशम्पायन द्वारा पुनः इसी 'जय' महाकाव्य को जन्मेजय के यझ समारोह में ऋषि-मुनियों को सुनाया, तब यह वार्ता "भारत" के रूप में जानी गई। इसका सम्भावित रचना काल 3000 ई. ईसा. पू. माना गया है।

तीसरी बार फिर से वैशम्पायन और ऋषि मुनियों की इस वार्ता के रूप में कही गई 'महाभारत' को सूत जी द्वारा 18 (अठारह) पर्वों में मुख्यतस्य करके समस्त ऋषि मुनियों को सुनाया गया। इनका सम्भावित रचनाकाल 2000 ई. ईसा. पू. माना गया है। महाभारत में लिखा गया है कि कुरुक्षेत्र के युद्ध के कुछ दिनों बाद व्यास जी ने महाभारत की रचना की थी, क्योंकि कुरुक्षेत्र का युद्ध भारत में पारम्परिक रूप से 3100 ईसा पूर्व माना जाता है, इसलिए यह सम्भावित रचना समय दिया गया है, अधिकतर पश्चिम विद्वान महाभारत को 1000 ई. पू. लिखा मानते हैं और कुरुक्षेत्र युद्ध को 1400-100 ई. पू. परन्तु महाभारत में दी गई ज्योतिषीय गणनाएँ भी 3100 ईसा. पू. की ओर संकेत करती हैं।

तर्तमान महाभारत के रचना काल के सम्बन्ध में विचारणीय बिन्दु निम्न है। 445 ईस्वीके के शिलालेख में "शतसाहस्या संहिता वैदव्यासेनोक्तमू" अर्थात् महाभारत के एक लाख से अधिक श्लोक होने के कारण वेदव्यास ने "शतसाहस्या संहिता" कहा है इस प्रकार यह महाभारत में निर्दश प्राप्त है।

कनिष्क के सभा पर्णिडत श्री अश्वधोष ने "बह्मसूची हरिवंश महाभारत" में इस पद का उल्लेख किया है। इसी प्रकार आश्वलायन ने गुहसूत्र में 'विष्णुसहस्त्र' नाम का उल्लेख किया है। इस स्तोत्रों शब्दों का स्थिति काल ई. पू. चौथी शताब्दी (चतुरशताब्य) माना जाता है। अतः महाभारत की मूलरचना इससे पहले की प्रतीत होती है। बुद्ध से पूर्व ही महाभारत की रचना निश्चित ही अतः महाभारत का रचना काल 400 ई. से पूर्व ही मानना न्यायसंगत होगा।

महाभारतकालीन समाज

महाभारत भारत की तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्रिया तथा मानवीय परम्पराओं को उपस्थित करती थी। सामजिक जीवन के वर्ण व्यवस्था की दृष्टि से प्रमुख चार वर्ग किए गए। वे चारों वर्ग निम्न प्रकार से हैं

- ब्राह्मण
- क्षत्रिय
- वैश्य
- शूद्र

इन चारों वर्गों के अलग-अलग कार्य निर्धारित किए गए ब्राह्मण के लिए यज्ञ, अध्ययन दान आदि क्रिया निर्धारित किए गए हैं। वैश्यों के लिए कृषि कार्य, पशुपालन, वाणिज्य आदि कार्य निर्धारित किए गए और शूद्र के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनों की सेवा कर जीविकोपार्जन करना ये निर्धारित किए गए थे। उस समय महाभारत कालीन समाज में चार आश्रम थे। ब्रह्मचर्य गूहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम । इन चारों आश्रमों के नियम और इसमें रहने के लिए उम्र और समय निर्धारित किए गए थे।

तत्कालीन समाज में सोलह संस्कार थे, जिन्हें मानना अनिवार्य था। उस समय आठ प्रकार के विवाह भी प्रचलित थे। बहुपत्नी प्रथा भी प्रचलित थी इस प्रथा में राजा या सामान्य जन एक से अधिक पत्नी रख सकते थे। उनके लिए विवाह सम्बन्धी कोई नियम निर्धारित नहीं किए गए थे। इस प्रकार समाज में स्त्रियों की स्थिति शोचनीय नहीं थी । पुत्री के जन्म लेने पर लोगों को प्रसन्नता नहीं होती थी। पुरूष अनेक विवाह कर सकते थे, सती प्रथा भी प्रचलित थी । तत्कालीन समाज में गाय्यारी, कुत्ली, द्रौपदी, सुभद्रा सत्यभामा आदि नारियों का दायित्व उनके अधिकार के अनुसार था। इन्से सिद्ध होता था कि स्त्रियों की स्थिति एक जैसी नहीं थी । माता-पिता और गुरूओं का स्थान पूजनीय था। भीष्म की पितृभक्ति, एकलव्य-अर्जुन की गुरूभक्ति सुप्रसिद्ध थी। विद्यार्थी गुरुकुलों में जाकर पढ़ते थे। उस समय आत्माध्यायी वार्ता-व्यवस्था-आयुर्वेद आदि की शिक्षा दी जाती थी।

"यत्रो नार्यश्व पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:"

महाभारत काल में आयुः माप का वातावरण प्रदूषण युक्त एवं विशेषतः राजपरिवारों में अनैतिकपर्यावरण व्यवस्था स्थापित थी, धर्म का उदात रूप विधमान नहीं था, धर्म के स्थान पर स्वार्थ परायणता का विस्तार हुआ। जैसे- द्रौपदी के चीर-हरण होने पर सभी सभासद दुर्योधन के भय से मौन रहकर चुप बैठे हुए थे।

महाभारत काल की सामाजिक परिस्थितियाँ वर्णाश्रम व्यवस्था के जरिए तय होती थी । इस व्यवस्था की वजह से चार वर्ण वने, जो बाद में भयानक जाति प्रथा में तब्दील हो गए। जो आज भी जारी है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र। इन चारों वर्णों को अलग-अलग काम दिए गए। ब्राह्मणों के जिम्मे शिक्षा, धर्म, और आध्यात्मिक क्रियाएँ होती थी । ब्राहाणों को सबसे ऊपर माना जाता था, क्योंकि वे इस दुनिया से परे की चीजों से जुड़े होते थे। क्षत्रिय शक्तिशाली होते थे क्योंकि सैन्य बल और समाज को ताकत दोनों उन्हें हासिल थी।

वैश्य चालाकी से काम निकालते थे क्योंकि इनके पास धन होता था। शुद्रों को अमीरों पर दबाया कुचला जाता था। लेकिन उनके पास संख्या बल था, उनकी संख्या बहुत ज्यादा थी। कभी-कभार वे हिंसा पर उतर आते थे और सभी को नीचा दिखाते थे, लेकिन आमतौर पर वे दलित ही थे। समाज के चारों वर्णों के लिए धर्म की स्थापना की गई धर्म के आधार पर ही तय होता था कि चारों वर्णों के कार्य व नियम क्या-क्या होंगे। महाभारत काल में एक महान संत हुए, जिन्हें महर्षि पराशर के नाम से जाना जाता है। वे समाज को उन्नति के पथ पर ले जाने के लिए आजीवन प्रयत्नरत रहे। उन्होंने समाज में फैली बुराइयों को भी दूर करने का प्रयास किया । वह ऐसे परम ज्ञानी और सिद्ध पुरुष थे कि उन्होंने ब्रह्मतेज की स्थापना के लिए अनेक शाखाओं को साथ में लेकर सैकड़ों आश्रमों की नींव रखी। महाभारत काल में सैकड़ों राज्य और उनके राजा थे, जिनमें कुछ बड़े तो कुछ छोटे थे। कुछ राजा अवश्य धर्म परायण थे, जिनके आचरणों से समाज किसी-न-किसी रूप में पीड़ित रहता था।

अतः स्पष्ट होता है कि महाभारतकालीन समाज में अस्थिरता, मूखों में भौतिक पदार्थों के प्रति उच्छा. अं भाव प्रदर्शन की प्रकल उत्कंठा. और

परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत

महाभारत सर्वाधिक प्रसिद्ध महाकाव्य है। जीवन के शास्वत मूल्यों के वर्णन के कारण से, सभी रसों के उचित परिपाक के कारण से, अनेकानेक छोटे-छोटे आख्यान-उपाख्यानों के संग्रह के कारण से बहुत से कवियों ने महाभारत को आधार बनाकर और मार्गदर्शन प्राप्त करके काव्य रचना की है, वे निम्न प्रकार से हैं

महाकाव्य

- शिशुपालवधम् (माघ:)
- नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष)
- किरातार्जुनीयम् (भारवि)
- दूतघटोत्कचम्, दूतवाक्यम्, कर्णभारम्, मध्यम्म— व्यायोगम्, पण्चरात्रम् और उरुभङ्गम् (भास)
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)
- वेणीसंहारम् (भट्टतारायण)
- बालभारतम् (राजशेखर)

चम्पूकाव्य

- नलचम्पू (त्रिविक्रमभट्ट)- भारतचम्पू (अनन्तभट्टस्य)
- पाण्वलीस्वयम्बर चम्पू (नारायण भट्ट)
- द्रोपदीपरिणय चम्पू (नन्दकवि:)

इन सभी ग्रन्थों के अतिरिस्त अन्य काव्य भी महाभारत को आधार बनाकर लिखे गए हैं।

महाभारत का साहित्यिक महत्त्व

महाभारत एक अनुपम साहित्य ग्रन्थ है अतएव इसका विलक्षण साहित्यिक महत्त्व है, जिसका वर्णन निम्नलिखित है

गुण और रीति

काव्य शास्त्रीय दृष्टि से महाभारत में पाञ्चाली रीति है -

"शब्दार्थयो: समो गुम्फ: पाञ्चालीरीतिरिष्यते"

यह ग्रन्थ ओज-प्रसाद माधुर्य आदि सभी काव्यगुणों से परिपूर्ण है।

रस

यद्यपि महाभारत में अङ्गीरस शान्त रस है, फिर भी भीम-द्रौण-कर्ण शल्य आदि की बातों से वीर रस की धारा प्रवाहित होती है।

अलंकार

महाभारत में शब्दालंकारों में मुख्य रूप से अनुप्रास, अर्थालंकारों में उपमा-रूपक-उत्प्रेक्षा अर्थान्तरन्यास अलङ्गर दिखाई देते हैं; जैसे-

"भीमो भीमपराक्रम:

अशोक: शोकनाशन: ॥"

छन्द

महाभारत में अधिकांशत: अनुष्टुप छन्द का प्रयोग है, लेकिन कहीं-कहीं गद्य भाग भी दिखाई देता है, अनुष्टुप छन्द के अतिरिक्त अन्य छन्दों का भी प्रयोग है।

जैसे- "अलंकृते शुभे: शब्दे: छन्दोवृतेश्च विविधी:"

भाषा शैली

महाभारत की संवादात्मक शैली भाषा गंभीर और प्रभावोत्पादक है।

"मूहर्त ज्वलितं हि श्रेयो न च धूमायितं चिरम्"

इसलिए यह महाकाव्य विश्व साहित्य में अनुपम है।

महाभारत में आख्यान

महाभारत के मुख्य आख्यान निम्नलिखित हैं

- कद्रुविनतोपाख्यानम् (आदिपर्व) दक्ष प्रजापति, कद्रु-विनता इन दोनों कन्याओं का विवाह महर्षि कश्यप के साथ होने का वर्णन तथा गरुड़ और नागों की उत्पत्ति का वर्णन किया है।
- शकुन्तलोपाख्यानम् (आदिपर्व) दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रणय कथा का वर्णन है। यह आख्यान कालिदास द्वारा विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम् का उपजीव्य है।
- ययात्युपाख्यानम् (आदिपर्व) ययात की जीवन प्राप्ति की कथा उपनिवद्ध है।
- शिशुपालोख्यानम् (सभापर्व) शिशुपाल वध की कथा वर्णित है।
- मत्स्योपाख्यानम् (वनपर्व) प्रलय अवस्था में मछली द्वारा मनु की रक्षा का वर्णन है। 'शतपथब्राह्मण' में भी यह कथा प्राप्त होती है।
- नलोपाख्यानम् (वनपर्व) नल और दमयन्ती की प्रणय कथा का वर्णन है। श्रीहर्ष द्वारा रचित नैषधीयचरितम् और 'त्रिविक्रम' द्वारा रचित 'नलचम्पूपाख्यान' आदि महाभारत को आधार बनाकर किए गए है।
- शिव्योपाख्यानम् (वनपर्व) इस आख्यान में महाराज शिबि स्येन से कपोत की रक्षा करते है।
- रामोपाख्यानम् (वनपर्व) इसमें वाल्मीकि रामायण का सार संक्षेप में वर्णन किया गया है।
- सावित्री उपाख्यानम् (वनपर्व) इस आख्यान में सावित्री और सत्यवान की प्रणय कथा का वर्णन और इन दोनों की कथा पवित्र धर्म का आदर्श उपस्थित करती है।
- अम्बोपाख्यानम् (उद्योगपर्व) 'शिखण्डी भीष्मेन किमर्थम् अवध्य' ऐसा पूछने पर दुयोंधन को भीष्म ने अम्बा और अम्बालिका का वृत्तान्त सुनाया।
- इस प्रकार ये आख्यान पर्ववर्तिकवियों के लिए प्रेरक सिद्ध हुए।
- शिष्युपुराणनम् (वनपर्व) इस आछान में महाराज शिबि शंत्रु से कपोत की रक्षा करते हैं।
- रामोपाख्यानम् (वनपर्व) इसमें वाल्मीक रामायण का सार संक्षेप में वर्णन किया गया है।
- सावित्री उपाख्यानम् (वनपर्व) इस आख्यान में सावित्री और सत्यव्रन की प्रणय कथा का वर्णन और इन दोनों की कथा पतिव्रत धर्म का आदर्श उपस्थित करती है।
- अश्वोपाख्यानम् (उद्योगपर्व) "शिखण्डी भीष्मेन किमर्थम् अवध्य" ऐसा पूछने पर दुर्योधन को भीष्म ने अम्वा और अम्बालिक्त का वृत्तान्त सुनाया। इस प्रकार ये आख्यान परवर्किबियों के लिए प्रेरक सिद्ध हुए।

पुराण का परिचय

पुराण शब्द वैदिक काल से धार्मिक साहित्य के अर्थ में प्रचलित है। वस्तुतः प्राचीनकाल में ऐतिहासिक भौगोलिक तथ्य पर वंशाजती आदि विषय पुराण रूप में प्रकाशित किए गए हैं। पुराण किसी भी एक व्यक्ति के लिए एक ही समय में नहीं लिखा गया है। अपितु धीरे-धीरे विकसित हुआ है। अतः पुराण विकासात्मक साहित्य है, अम्वर्वदेद के अनुसार पुराण का आविर्भाव ऋग्वेद आदि वेदों के साथ ही हुआ है।

"ऋच: सामानि छन्दांसि पुराणं यजुम्मू सह।।"

छान्दोग्योपनिषद् में नारद जी ने इतिहास पुराण को संयुक्त रूप से पाँचवाँ वेद कहा है।

"इतिहास पुराण पश्चमं वेदनां वेदम्।"

महाभारत में 'शतपथब्राह्मण' में भी पुराण को वेद कहा गया है,

"वेदस्य अर्थस्य विस्तार: इतिहास पुराणाध्यां करणीय।"

अर्थात् वेदों के अर्थ का विस्तार करने के लिए इतिहास को पुराणों के माध्यम से कहना चाहिए।

वस्तुत: वेदों की विसष्टता को मनोरंजक विधि द्वारा जानने के लिए चार विधिपूर्वक साहित्य को विकसित किया गया है, वे निम्न हैं- इतिहास, पुराण, गाथा, और नाराशंसी। इनमें पुराण शब्द का प्रयोग पुरातात्विक विवरण के लिए किया गया है।

पुराणों के रचयिता वेदव्यास को माना जाता है पुराण शब्द का निर्वचन इस प्रकार है

- प्राचीन आख्यान पुराण कहे जाते हैं- पुराणमाख्यानं पुराणम्
- यास्ककृत निरूक्त के अनुसार, "पुरा नवं भवति इति पुराणम्।"
- वायु पुराण के अनुसार, "पुरा परम्परां व्यक्ति पुराणम्तेन वै स्मृतम्।"
- पद्म पुराण के अनुसार, "पुरार्थेषु आनायतिति पुराणम्।"
- वायु पुराण के अनुसार "पुराकाल की यथार्थ घटना पुराण कही जाती है। "यसमातुरा हनति।"
- भाष्यकार सायण के अनुसार, "जगत् उत्पत्ति के विकास का क्रम-वाचक साहित्य ही पराण कहा जाता है।"

पुराण का रचनाकाल

पुराण एक विकासशील साहित्य है, वैदिक युग के समाप्ति काल में पुराण रचना क्रम आरम्भ हुआ, व्यास ने प्रारम्भ में अपने शिष्य लोभ हर्षण को पुराण विषयक आदिज्ञान दिया, जिससे विषय परम्परा ने निरन्तर विकास प्राप्त किया। शिष्य परम्परा में भी मूलगुरु के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए ही अतिरिक्त सामग्री का संयोजन किया इसलिए प्राप्त सभी पुराण 'व्यास' नाम से प्रसिद्ध है। पुराणों का आरम्भ काल 600 ई. पूर्व निश्चित किया गया है। 500 ई. तक इसका पूर्ण विकास हो गया था। पुराणों की संख्या अठारह (18) मानी जाती है वे इस प्रकार हैंमत्स्यपुराण, मार्कण्डेय पुराण, भविष्य पुराण, भागवत पुराण, ब्रह्म पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, विष्णु पुराण, वराह पुराण, वामन पुराण, वायु पुराण, अग्नि पुराण, नारद पुराण, पद्म पुराण, लिङ्ग पुराण, गरुडपुराण, कुर्मपुराण, और स्कन्द पुराण। पुराणों का विभाजन हिन्दू धर्म के प्रमुख आराध्य देव ब्रह्मा-विष्णु-महेश के आधार पर सात्विक, तामस और राजस रूप में हुआ।

प्रमुख पुराण

सात्विक पुराण

विष्णु पुराण, भागवतपुराणम्

- नारद पुराण, गरुड़पुराण
- वराह पुराण, पद्म पुराण

तामस पुराण

मत्स्य पुराण, कूर्म पुराण

- वायु पुराण, लिङ्ग पुराण
- अग्नि पुराण, स्कन्द पुराण

राजस पुराण

ब्रह्माण्ड पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण

- ब्रह्म पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण
- ब्राहम पुराण, भविष्य पुराण।

प्रमुख 18 पुराणों का वर्णन निम्न प्रकार है

- विष्णु पुराण विष्णु पुराण के अनुसार पाराशर और शैत्य कृषि ने एकमात्र इसी पुराण से समस्त प्राचीन साधारण सहित श्लोक की। इसमें छह अंश और लगभग नौ हज़ार श्लोक बताए गए है। इस पुराण में छ: खण्ड और 126 अध्याय हैं।
- भागवत पुराण यह पुराण सर्वाधिक विश्सनीय और वैष्णवधर्सय पुराण है, इसमें विष्णु की भक्ति के बारे में बताया गया है "विद्याप्रदाय भागवते पुराणे।" इस पुराण में 12 स्कन्द, 336 अध्याय, 18 हज़ार श्लोक हैं। इसमें इसके स्वरूप से कृष्ण लीला का वर्णन है। यहाँ कलियुग मुक्ति ने मोक्ष की इच्छा की अवतार माना है।
- अग्नि पुराण इस पुराण में तंनसाहित्य विद्या का संकलन प्राप्त होता है, इसमें काव्यशास्त्र व्याकरण, ज्योतिष, आयुवेंद, कोश, नाट्य विद्या, अग्नि विज्ञान का वर्णन है। भारतीय विहान अग्नि पुराण को "भारतीय तन्त्र कोष" भी कहा गया है।
- "आयोये ते पुराणोऽायत्र सर्बा: विद्या: प्रवर्तिता:"
- मतस्य पुराण यह ऐतिहाशिकता को दृष्टि से महत्वपूर्ण पुराण है इस पुराण में अमर राजाओं के सम्प्रतियाइतों की समाचारों मिलती है।
- मार्कन्डेय पुराण इस पुराण में युद्ध युद्ध, धर्म, देवों की मुख्य स्तुति के रूप में सर्वीतम लिखा गया है। इस पुराण में "देवीमाहात्या" प्राप्त है, जो आज भी धार्मिक दृष्टि से प्रसिद्ध है।
- भविष्य पुराण इस पुराण में भावी घटनाओं और राजाओं का विवरण है, अधिकत्म प्रसिद्ध है। इस पुराण को सार्माकीशास्त्र ग्रन्थ कहा है।
- ब्रहाण्ड पुराण इस पुराण में तीनों के महत्व और अध्याय का संग्रह है। अध्यात्म-रामायण इस पुराण का अंश माना जाता है। इस पुराण में नन्दिवंश का लेखा को विस्तूत-करके नन्दिकेशोपाख्यानम् रूप में प्रस्तूत किया है।
- ब्रह्मवैवर्त पुराण इस पुराण में सम्पूर्ण सृष्टि की रचना से उत्पन्न माना है, इसलिए इसका नाम ब्रह्मवैवर्तायं, हुआ।
- वायु पुराण ऐसा माना जाता है कि ब्रहापुराण प्रथम पुराण रचना है पर पुराण में गद्ध लिखा, अधिक स्वयं का प्रमाण दिया गया है।
- वामन पुराण विष्णु के वामन अवतार के यह प्रथम आरम्भ होता है, विष्णु के अवतार के साथ शिव परिवार से सम्बन्धित आख्यानों का वर्णन है।
- स्कन्द पुराण इस पुराण में पुष्लर: विष्णु के चरित्र अवतार का वर्णन हुआ है। इस पुराण के नाज्वेमशियद के नेमिकेत उपाख्यान का वर्णन है। इस पुराण में 218 अध्याय, 24 हज़ार पढन है।

एवं स्वविषये कृत्यानकुल्याधाव विचाधणः।

परोपकारात् सरक्षेवं् प्रधानात् बुद्रकानपि॥

अर्थ

इस प्रकार चद्विनाना राजा को चाहिए कि अपने राज्य के छोटे-बड़े कुत्य-अकुत्व लोगों को वह किसी भी प्रकार शत्रु के पक्ष में जाने से रोके।

परविपये कृत्याक्कृत्यपक्षोपग्रः

कूत्याकृत्यपक्षोपत्रहः स्वविषये व्याख्यातः परविषये वाच्यः।

अर्थ

अपने देश में कुल-अकुल्ल पक्ष को किस प्रकार सुरक्षित अथवा संगठित रखना चाहिए।

संश्रुल्यार्धान विषलब्धः, तुल्यकारिणो: शिल्ये बोषयको वा विभानितः,

वल्लभानस्त्दः: समाहृय पराथितः, प्रवासोपवप्तः , कुत्ना व्यय-मलबधकार्यः

स्वथर्मद् दायादाद् विषस्न्दः , मागाथिकायश्यां श्रष्टः , कुल्येरस्लर्हितः

प्रभभाभिमुखस्त्रीकः, कायधिन्यस्तः , परोक्तदण्डितः , मिध्याद्यारवारितः ,

सर्वस्वपाहारितः, बचनपरिक्लिष्टः , प्रवासितबन्थुर्यीति कुद्धदर्पः॥

अर्थ

जिसको धन देने की प्रतिज्ञा करके धन दिया गया हो, किसी शिल्य का उपकार सम्बन्धी कार्य को समान रूप से करने वाले दो व्यक्तियों में से एक का तो सम्मान किया गया हो और दूसरे की अवमानना की गई हो, राजा के विप्रास कर्मचारियों ने जिसको राजभवन में प्रवेश करने से रोक दिया हो, स्वयं कुलाकर जिसका तिरस्कार किया गया हो। राजाजा के प्रकाक्षित होने के कारण दु:खी, व्यय करके भी जिसका अपेक्षित कार्य पूरा नहीं हुआ हो जिसको अपने धर्म तथा अधिकार से रोका गया हो, सम्मतित तथा अधिकाररिपूर्ण पद से निकाले जात्ता किया गया हो, राजपुरूषों द्वारा जिसकी बदनाम किया गया हो, जिसकी स्त्री को जबरदस्ती छिन लिया गया हो, जिसको जेल में दूंल किया गया हो, दूसरे के कहने मात्र से जिसको दण्ड दिया गया हो झूता इल्जाम लगाकर जिस पर धार्मिक प्रतिबन्ध लगा दिया हो, जिसका सर्वस्व अपहरण किया गया हो अशकर कार्यो पर नियुक्त करके जिसको पीड़ित किया गया हो और जिसने वनुयु-बाच्ययों को देश निकाल दिया गया हो-इस प्रकार के सभी लोग 'कुत्ददर्य' कहलाते हैं।

स्ववयुयुहतः, विप्रक्रतः, पापकर्माभिखथातः तुल्यदोषेद्रण्डोद्रितः,

पर्यातमुष्यिः, दण्डनोपहतः सर्वाधिकरणस्थः , सहसापतिवार्यः,

ततकुलीनापायंसुः प्रद्विद्धो राजा, राजदेवी चेति भीतवर्णः॥

अर्थ

किसी लोग के कारण हिंसा करके जो दक्षिण हो चुका हो, पाप कर्मो को करने में जो कुशल हो, अपने समान अपराधी को दण्डित हुआ देखकर जो खबरा गया हो, भूमि का अपहरण करने वाला, जो दण्ड के द्वारा वश में किया गया हो, सभी राजकीय विभागों पर जिसका अधिकार हो, अपनी कार्यक्षमता से जिसने प्रभुत्व धन एकत्र कर लिया हो, जो राजा के किसी बंशज हिस्सेदार के निकट कुछ कामना से रहता हो, जिससे राजा शत्रुता रखता हो और जो राजा से शत्रुता रखता हो, वह 'भितवर्ण' कहलाता है।

यथा क्ष्गाणिनं धेतुः क्षमयो दुग्यै न ब्राह्मणोष्यः, एवमेव राजा

सत्यश्रज्ञावावयथाक्तिहींनेथ्यो दुग्धे नातमयुणसम्भन्नेथ्यः। असी राजा

पुरूष-विरोषद्शः सेव्यताम्-इति लुव्यवर्गमुपजाययेत्।

अर्थ

लुक्य वर्ग को वश में करने के लिए गुप्तचर यह कहते हैं कि जैसे चाण्डालों को गाय चाण्डालों के लिए ही दूध देती हैं, ब्राह्मणों के लिए नहीं, उसी प्रकार राजा भी बल बुद्धि और वाक्मशक्ति से हीन गये लोगों के लिए लाभदायक है, सर्वगुण सम्पन्न लोगों के लिए नहीं। इसके विपरीत अयुक्त राज्य बड़ा गुपन है तुम्हें इसी के आश्रय में रहना चाहिए। इस प्रकार लुक्यवर्ग की भितवण्ड।

स्वविषये कृत्याकृत्वपक्षरक्षणम्

क्रगमहामन्यायमर्थः पीरजानपदानपर्सयेत्।

अर्थ

राजा को चाहिए कि महानन्नों, मनीत्रयों, पुरोहित आदि के समीप गुप्तवर नियुक्त करने के पश्चात् वह अपने प्रति प्रजाजनों तथा समस्वविविर्षायों का अनुभव द्रेष जानने के लिए वहों भी गुप्तचरों की नियुक्ति करे।

सतिषणो द्रद्विनस्वीर्थिभाराालापुणननसममयवायेषु विवाद

कुर्युः -सर्वगुणसम्यन्वरचायं राजा श्रूपतो । न चारय काश्चिद्र गुणो

दृरयते यः पीरजानपदान् दण्डकराघ्यां पीडयति इति।

अर्थ

पहले दो गुप्तचर आपस में ही लड़गे-झगड़ेंगे लगे और बाद में वे तीर्थस्थलों, तथा सोमान्वटियों खाने-पीने की दुकानों, राजकर्मचारियों के बीच तथा जान प्रकार के लोगों में यह कहकर वाद-विवाद करें कि यह राजा तो सर्वगुणसम्पन्न सुन जाता है किन्तु इसमें कोई भी सदगुण नहीं दिखाइ दे रहा है। उल्ट वह समत्वत्मियों को दण्ड देकर एवं कर वसूली करके पीड़ा पहुँचा रहा है।

तत्र येउनुथशंसेयु : तानिवरस्तें च प्रविषेधयेद-मानस्यन्याया-भियूता:

प्रजा मनूं वैस्वनं राजानं चक्रिरे। धान्यषड्भामं पुण्यद्शभामं

हिरण्यं चास्य भागृथेयं प्रकल्पयामासुः। तेन भूता राजानः प्रजानां

योग-क्षेमवहाः। तेभां किल्विर्थं दण्डकरा हरन्ति, योगक्षेमवहाश्रव प्रजानाम्।

अर्थ

उनके बाद सुनने वालों की उचित-अनुचित प्रतिक्रियाओं को ताड़ना हुआ दूसरा गुप्तचर उनके विरोध में यह कहता है-देखो, जैसे छोटी मछली, बड़ी मछली को खा जाती है, मुराकाल में वैसे ही बलवान लोगों ने निर्बल लोगों का रहन दम्म कर दिया हुआ इस अवस्था से बचने के लिए प्रजा ने मिलकर विवाट्वार के पुत्र मन को अपना राजा नियुक्त किया और तभी से खेती की उपज का छठा भाग, व्यापार की आमदनी का दसवों भाग तथा धोड़ा-सा सुवर्ण राजा के लिए कर रूप में निर्धारित भी कर दिया था। प्रजा के द्वारा निर्धारित भाग को पाकर राजाओं ने प्रजा के योगक्षेम का सारा दायित्व अपने ऊपर लिया। इस प्रक्रार से निर्धारित दण्ड एवं प्रजा के उत्पीड़नों को दूर करने में सहायक होते हैं और प्रजा की भलाई एवं कल्याण के कारण सिद्ध होते है।

कुक्लतुलभीतावमामिनस्तु परेषां कृत्वाः।

तेभां कातीन्विक-नैमितिकमौहतिकर्स्थजना:

परमयशिसम्वन्भ्रम् अमित्रप्रतिसम्बय्यं वा विद्यु:।

अर्थ

जब सारा जनपद असन्तुष्ट हो जाए तब राजा उनके स्त्री-बच्चों को अपने अधिकार में कर ले और उन्हें बधन के कार्य में भेज दिया जाए, क्योंकि ऐसा भी सम्भब है कि वे असन्तुष्ट लोग शत्रुओं से जाकर मिल जाए। प्रायः ऐसा देखा गया है कि क्रोधी, डरपोक और अपमानित लोग सहज ही शत्रु के पक्ष में हो जाते है।

तुष्टानर्थमानाथां पूजयेत्। अतुष्टार्त सामादनभेददण्डैः साध्येत्। अर्थ

जो व्यक्ति सन्तुष्ट हो, राजा उन्हें और भी धन मान से परिपूर्ण करे, किन्तु असूनतुष्ट व्यक्तियों को साम, दाम, दण्ड, भेद जैसे भी बन पड़े अपने वश में

एवं स्वविपये कृत्यानकुन्याधाव विचद्रणः।

परोपकारात् सर्माक्षं प्रधानम् बुद्धकानपिः।।

अर्थ

इस प्रकार चर्द्रनाथा राजा को चाहिए कि अपने राज्य के छोटे-बड़े कुल-अकुल लोगों को वह किसी भी प्रकार शत्रु के पक्ष में जाने से रोके।

परविपये कृत्याकृतपक्षोपपहः

कृत्याकृतपक्षोपपहः स्वविपये व्याख्मातः परविपये वाच्यः।

अर्थ

अपने देश में कृत-अत्कृत पक्ष को किस प्रकार सुरक्षित अथवा संगठित रखना चाहिए।

संश्रुत्याधीनं विश्वलंभः, तुल्यकारीणोः शिल्ये वोष्यको वा विमारितः,

बल्लभानस्तदः, समाहूत पराजितः, प्रवासोपवत्तः, कृत्वा व्यय-मतलबकार्यः,

स्वधर्माद दायादाद् वंचितन्तः , मागाधिकारणया श्रष्टः , कृल्येततंतिहः,

प्रथमाभियुन्द्रन्दीकीकः कार्यभष्टस्तः , परिवतर्तन्हज़ः, मिथ्याचारवर्तितः

सर्वस्वपाहारितः, वचनपरिमिलष्टः, प्रवासितवन्धुर्गीति कुरुन्दर्पः ॥

अर्थ

जिसको धन देने की प्रतिज्ञा करके धन दिया गया हो, किसी शिल्य का उपकार सम्बन्धी कार्य को समान रुप से करने वाले दो व्यक्तियों में से एक का तो सम्मान किया गया हो और दूसरे की अवमानना की गई हो, राजा के विश्वस्त कर्मचारियों ने जिसको राज्यभवन में प्रवेश करने से रोक दिया हो, स्वयं कुलाकर जिसका तिरस्कार किया गया हो। राजाजा के प्रकाश्नित होने के कारण दुःखी, व्यय करके भी जिसका अपेक्षित कार्य पूरा नहीं हुआ हो। जिसको अपने धर्म तथा अधिकार से रोका गया हो, सम्मानित तथा अधिकारसंपूर्ण पद से निकाले जाया किया गया हो, राजपुरुषों द्वारा जिसकी बदनाम किया गया हो, जिसकी स्त्री को जबरदस्ती छिन लिया गया हो, जिसको जेल में दूंस दिया गया हो, दूसरों के कहने मात्र से जिसको दण्ड दिया गया हो। ध्रूठा इल्जाम लगाकर जिस पर धार्मिक प्रतिबन्ध लगा दिया हो, जिसका सर्वस्व अपहरण किया गया हो, अक्षक कार्यों पर नियुत्त करके जिसको पीड़ित किया गया हो और जिसने बस्तु-बाह्यमों को देश निकाल दिया गया हो-इस प्रकार के सभी लोग 'कुरुन्दर्य' कहलाते हैं।

स्ववायुाहतः, विश्रकृतः, पापर्रनाभिबाधातः, तुल्यदेवदेवंण्डडोध्रितः,

पर्याफ्पुौधः, दण्डनोपहतः , सर्वाधिकारपश्यः , सहायतनिवार्यः,

तत्कुलीनापयायुंः प्रसिद्धो राजा, राजदेवी चौत भीतवर्णः।।

अर्थ

किसी लोग के कारण हिंसा करके जो दक्षिण हो चुका हो, पाप कर्मों को करने में जो कुशल हो, अपने समान अपराधी को दर्णित हुआ देखकर जो धबरा गया हो, भूमि का अपहरण करने वाला, जो दण्ड के द्वारा वश में किया गया हो, सभी राजकीय विभागों पर जिसका अधिकार हो, अपनी कार्यक्षमता से जिसने प्रभुत्त धन एकत्र कर लिया हो, जो राजा के किसी वंशज हिस्सेदार के निकट कुछ कामना से रहता हो, जिससे राजा शत्रुता रखता हो और जो राजा से शत्रुता रखता हो, वह 'भीतवर्ण' कहलाता है।

यथा क्षणणिगे धैयुः क्षमयो दुग्धे न त्राह्मणेष्यः, एवंमेव राजा

सत्यश्रत्रतजश्यशशितहीनयो दुग्थे नात्यगुणसम्पनेष्यः।

असो राजा पुरुष-विरोष्यः सेववताम्-इति लुच्यवर्गपुरुषायचे।

अर्थ

लुच्य वर्ग को वश में करने के लिए गुरुत्तर यह कहते हैं कि जैसे चांडालों को गाय चांडालों के लिए ही दूध देती है, त्राह्मणों के लिए नहीं, उसी प्रकार राजा भी बल बुद्धि और वाल्कशक्ति से हीन गये लोगों के लिए लाभदायक है, सर्वतुण सम्म्न लोगों के लिए नहीं। इसके विपरीत अयुत्त राज्य बड़ा गुपत है तुम्हें उसी के आश्रय में रहना चाहिए। इस प्रकार लुच्यवर्गों की मिलाए।

एवं स्वविषये कृत्यााकृल्याधाव विचयूणः।

परोपकारात् संम्बंधं प्रधानम् बुछधकानि।।

अर्थ

इस प्रकार चर्दवनता राजा को चाहिए कि अपने राज्य के छोटे-बड़े कुल-अकुल लोगों को वह किसी भी प्रकार शत्रु के पक्ष में जाने से रोके।

परविषये कृत्याकूलपक्षोपपदः

कृत्याकूल्यपक्षोपपदः स्वविषये व्याख्यातः परविषये वाच्यः।

अर्थ

अपने देश में कुल-अकूल पक्ष को किस प्रकार सुरक्षित अथवा संगठित रखना चाहिए।

संशुत्याधीनं विश्रम्भः, तुल्यकारीणोः शिल्ये बोपरको वा बैम्भातिकः,

वल्लभान्सस्तः, समाइयं पराजितः, प्रवासोपबरक्तः, कृत्वा व्यय-मत्लवकार्यः,

स्वधर्माद् दायादाद बोपइस्टः, मागधिकारणया भ्रन्टः, कुल्येतसहितः

प्रभामप्रियुन्नसतिकः, कार्यभन्सस्तः, परिबस्वीण्ड्त्तः, मिथ्याचारवर्तितः,

सर्वस्वपाहारितः, वचनपरिपिलस्टः, प्रवासितवन्युयति कुन्दबर्यः।।

अर्थ

जिसको धन देने की प्रतिज्ञा करके धन दिया गया हो, किसी शिल्य का उपकार सम्बन्धी कार्य को समान रुप से करने वाले दो व्यक्तियों में से एक का तो सम्मान किया गया हो और दूसरे की अवमानना की गई हो, राजा के विश्वस्त कर्मचारियों ने जिसको राज्यभवन में प्रवेश करने से रोक दिया हो, स्वयं कुलाकर जिसका तिरस्कार किया गया हो। राजाज्ञा के प्रकाशित होने के कारण दुःखी, व्यय करके भी जिसका अपोक्षित कार्य पूरा नहीं हुआ हो। जिसको अपने धर्म तथा अधिकार से रोका गया हो, सम्मानित तथा अधिकारसंपूर्ण पद से निकाले अल्या किया गया हो, राजद्रुल्यों द्वारा जिसकी बदनाम किया गया हो, जिसकी स्त्री को जबरदस्ती छीन लिया गया हो, जिसको जेल में दुंख दिया गया हो, दूसरे के कहने मात्र से जिसको दण्ड दिया गया हो। झूट्डे इल्जाम लगाकर जिस पर धार्मिक प्रतिवन्ध लगा दिया हो, जिसका सर्वस्व अपहरण किया गया हो, अशत कस्यों पर नियुक्त करके जिसको पीड़ित किया गया हो, और जिसने वस्तु-वाहवयों को देश निकाल दिया गया हो-इस प्रकार के सभी लोग 'कुन्दबर्प' कहलाते हैं।

स्वययुयहतः, विषकृतः, पापकर्माभिशवातः, तुल्यदेवदेवंण्मडोबितः,

पर्याममुटेवः, दण्डेनोपहतः, सर्वाधिकरणस्थः, सहायवतिवारीः

तत्कुलीनपारयबुरे प्रसिद्धो राजा, राजदेवी चैत बीववर्णः।।

अर्थ

किसी लोग के कारण हिंसा करके जो दक्षिण हो चुका हो, पाप कर्मो को करने में जो कुशल हो, अपने समान अपराधी को दंणडित हुआ देखकर जो घबरा गया हो, भूमि का अपहरण करने वाला, जो दण्ड के द्वारा वश में किया गया हो, सभी राजकीय विभागों पर जिसका अधिकार हो, अपनी कार्यक्षमता से जिसने प्रभुत्व धन एकत्र कर लिया हो, जो राजा के किसी वंशज लिस्तेदार के निकट कुछ कामना से रहता हो, जिससे राजा शत्रुता रखता हो और जो राजा से शत्रुता रखता हो, वह 'भीतवर्ण' कहलाता है।

यथा क्षयतिणो धोनुः क्षमयो दुन्थे न ब्राह्मगोव्यः,

एवमैव राजा सत्यश्मुडबन्सशरितहीनेयो दुन्थै नात्यगुणसम्पतेष्यः।

अनो राजा पुरुष-विरोषयः सेवाक्तम्-इति लुब्धवर्गपुरुषायचेत्।

अर्थ

लुब्ध वर्ग को वश में करने के लिए गुप्तचर यह कहते हैं कि जैसे चांण्डालों को गाय चांण्डालों के लिए ही दूध देती है, ब्राह्मणों के लिए नहीं, उसी प्रकार राजा भी बल बुद्धि और वाकशक्तित से हीन गये लोगों के लिए लाभदायक है, सर्वगुण सम्पन्न लोगों के लिए नहीं। इसके विपरीत अयुक्त राज्य बड़ा गुप्त है तुम्हे उसी के आश्रम में रहना

रामायण, महाभारत एवं पुराण

- ब्रह्मं पुराण सात पुराणों के द्वितीय पुराण की कथा राजा है, जिनमें कुल तिरानबेतीस हजार श्लोक हैं।
- पदग्न पुराण यह पुराण दो खंडों पवों में सम्पादित बताया गया है, जो चारों में पदस पुराण यह सर्वाधिक विशलाकार पुराण है। इस पुराण में छा हजार श्लोकों का उल्लेख मिलता है। इस समय इसमें 48,000 श्लोक हैं। अधिकांश वे चतुर्थ-पंचशिरवनखंड नाषी भी समाहित हैं। पाँच पुराण में वैष्णव मत है।
- विष्णु पुराण इस पुराण में सिलेविन पुराण की अपेक्षा कम श्लोक वाले हुए जिस में 18,450 श्लोक थे। वर्णित है।
- वायु पुराण इस पुराण के पुराने रूप में पाँच भागों में थे। पव नही श्लोक नहीं होंगे। है। इसमें भारत-वर्ष का मौलिक आदि विभिन्न विषयों का उल्लेख किया गया है।
- ब्रह्म पुराण इस पुराण के चार संहिताऐं है- ब्रह्मी, भागवती, सौरी और ब्रामहाणी। इस समय इनमें से भिन्नों ही इस पुराण में केवल सौर. संहिता और भामा शेष है।
- स्कन्दपुराण स्कन्द का दूसरा नाम कार्तिकेय कुमार है। इस पुराण में कुमारोहें स्कन्दसेजा भामा वर्णित है।

पुराणों के लक्षण

इनके दस लक्षण के करने से 'विस्तु पुराण' में, पुराण के लक्षण कहे गए हैं

"सर्ग प्रतिसर्ग वंशो मन्वन्तराणि च

वंशानुचरितं चैव पुराणं पण्चलक्षणम्॥ "

सर्ग

इस सृष्टि के प्रारंम्भ 'सर्जन' से लेकर के विभिन्न पदाथों की उत्पत्ति की प्रारम्भु तक की कही है।

प्रतिसर्ग

सृष्टि का रचना और पुनः सृष्टि के प्राकुत में लौटने तक के वर्णन चला है। वंश

देवताओं और ऋषियों के कुल की परम्परा ही वंश नाम से कही जाती है।

मन्वन्तर

मनु, रैखवा, इन्द्र, आदि, सप्तर्षि का और मानव आदि की प्रकारों का छोटे-छोटे समय तक में वे वर्णन ही 14 मन्वन्तर कहे हैं।

वंशानुचरितम्

विभिन्न वंशों के उत्कर्ष पतनो और उनकी महत्ता आदि वर्णन, वह परम्परा का वर्णन, वंशानुचरित नाम माना है। इस प्रकार यही आदि पाँच विषयों का विवेचन जो पुराणों में प्रधान रूप से माना जाता है।

महापुराण तथा उपपुराण

पुराणों को संख्या के विचार में अठारह कहते हैं। इनकी शिलीनी में पुराणों को अठारह ही माना है ।

पर इनके पुराणों के नामों के लिए हैं।

" मत्स्य कूर्म पद्म ब्रह्म वाराहलिंगं नारदीय मार्कण्डेयामि पुराणं ब्रह्मवैवर्त लिनं पुराणं स्कन्दौं।"

वंशानुचरितम्

विभिन्न वंशों से उत्पन्न महर्षि और राजर्षि का चरित्र वर्णन, वंश परम्परा का वर्णन, वंशानुचरितम् कहा जाता है। इस प्रकार सर्ग आदि पाँच विषयों का विवेचन ही पुराणों में प्रमुख रूप से माना जाता है।

महापुराण तथा उपपुराण

पुराणों की संख्या के विषय में मतभेद नहीं है सभी विद्वानों ने पुराणों को अठारह ही माना है

यह श्लोक पुराणों के नामों के लिए है।

"मद्वयं भद्वयं चैव बत्रयं वचतुष्टयमअनापलिङुकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते ||

मध्यम्

दो प्रकार आदि पुराण है

- मत्स्य पुराण
- मार्कण्डेय पुराण

पद्वयम्

दो प्रकार आदि पुराण है

पविक्य पुराण

- भागवत पुराण

ब्रह्मयम्

तीन आदि आदि पुराण है

ब्रह्माण्ड पुराण

- ब्रह्मपुराणम्
- ब्रह्मवैवर्त

वचनुल्यम्

चार प्रकार आदि पुराण है

- वामन पुराण
- विष्णु पुराण
- वराह पुराण
- वायु पुराण

"अम्निपर्वरककृष्णाचामि पुराणानि प्रचक्षते"।

- अ- अग्नि पुराण
- न- गरुड़पुराणम्
- ना-नारद पुराण
- कु-कूर्मपुराणम्
- ए- पद्मपुराण
- स्क- स्कन्द पुराणम्
- लि-लिगपुराणम्